REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 9 | JUNE - 2018

प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

भारती चौरसिया
शोध छात्रा, शिक्षा संकाय , महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म.प्र.)

सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध पत्र में यह जानने का प्रयास किया गया है कि प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन में कोई अंतर तो नहीं है और अगर है तो वह क्यों है? शोध के लिए सागर संभाग के प्रबंधन महाविद्यालयों के 500 विद्यार्थियों को चयन किया गया है जिसमें 250 छात्र एवं 250 छात्राऐं है। शोध प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ है कि प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तावना

समायोजन की क्षमता व्यक्ति के व्यक्तित्व पर भी निर्भर करती है। व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती रहती हैं और वह अपने वातावरण एवं परिस्थितियों से समायोजन करने का प्रयास करता है। जो व्यक्ति वातावरण एवं परिस्थितियों से अपने को समायोजित कर लेता है, वह प्रसन्न रहता है और जो समायोजन स्थापित नहीं कर पाता वह असंतोष, कुण्ठा, द्वन्द्व एवं तनाव का शिकार हो जाता है और वह अपने लक्ष्य से भटक जाता है जिसका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। समाज परिवर्तनशील है और इसके कारण नित्य नई समस्यायें उत्पन्न होती रहती है। इन समस्याओं के प्रति अपने को समायोजित करने के लिए समायोजन क्षमता का होना आवश्यक होता है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य भी व्यक्ति को इस योग्य बनाना है जिससे वह समाज में अपने को भलीभांति समायोजित कर सके। व्यक्ति को व्यवस्थित एवं सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिए परिस्थितियों से समायोजन करना आवश्यक होता है। व्यक्ति में समायोजन की प्रक्रिया घर से प्रारंभ होती है और यह जीवन पर्यन्त चलती रहती है। वह जहाँ भी जाता है, रहता है उसे वातावरण एवं परिस्थितियों के अनुसार अपने को समायोजित करना पड़ता है। व्यक्ति की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि उसका समायोजन समाज एवं वातावरण से समुचित रूप से हो। इस उद्देश्य को पूर्ण करने में सहायता करती है। मानव व्यवहार में परिवर्तन लाना एवं उसका शोधन करना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होता है।

वर्तमान समय में प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों को अपनी अच्छी शैक्षिक उपलब्धि के लिए समायोजन बहुत महत्वपूर्ण है। जिन विद्यार्थियों में समायोजन योग्यता अधिक होती है उन विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में अधिक सफलता प्राप्त होती है जबकि जिन विद्यार्थियों में समायोजन योग्यता कम या बिल्कुल नहीं होती है उनको शिक्षा के क्षेत्र में कम सफलता प्राप्त होती है और उन विद्यार्थियों में निराशा, कुण्ठा, सांवेगिक अस्थिरता आदि समस्यायें उत्पन्न हो जाती हैं प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् अधिकाशंतः विद्यार्थी किशोरावस्था से अधिक उम्र के होते हैं इन विद्यार्थियों के संवेगों में परिवर्तन अचानक एवं तीव्र गति से होता है इनके संवेगों पर नियंत्रण करना कठिन होता है। इन विद्यार्थियों के संवेगों को नियंत्रित करने हेतु उन्हें प्रशिक्षित करना होता है, स्वस्थ शरीर वाले विद्यार्थियों में संवेगात्मक अस्थिरता अधिक नहीं होती है फिर भी उनमें

समायोजन की समस्या उत्पन्न हो जाती है कभी–कभी ये विद्यार्थी किसी विशेष कार्यों में असफल हो जाने पर घर से भाग जाते हैं या कभी–कभी अधिक तनाव व निराशा के कारण आत्महत्या तक भी कर लेते हैं। समायोजन घर तथा विद्यालय में होना अत्यंत आवश्यक है। विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नता पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। क्योंकि विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नता के आधार पर उनका विकास नहीं किया तो उनकी शिक्षा अपूर्ण रहती है और इससे उनके व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास नहीं हो पाता है।

समायोजन का अर्थ सुव्यवस्थित अथवा अच्छी तरह से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया है जिसमें तात्कालिक आवश्यकताऐं पूरी हो जाऐं तथा मानसिक तनाव तथा द्वन्द्व न्यूनतम हो।

बोरिंग, लैंगफेल्ड व वेल्ड (2004) के अनुसार, ''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है।''

शेफर (2008) के अनुसार, ''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसकी सहायता से कोई जीवित प्राणी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली स्थितियों एवं आवश्यकताओं के मध्य संतुलन स्थापित करता है।''

अध्ययन के उद्देश्य

1. प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
2. प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् शहरी छात्र–छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
3. प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्र–छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1. प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् शहरी छात्र–छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्र–छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उपकरण –

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के समायोजन को मापने के लिए आर.पी. सिंह एवं ए.के.पी. सिन्हा द्वारा निर्मित ''समायोजन मापनी'' का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श – प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सागर संभाग के शहरी एवं ग्रामीण प्रबंधन संस्थानों के 500 विद्यार्थी सम्मिलित किए गए। जिसमें 250 छात्र एवं 250 छात्राऐं सम्मिलित हैं।

शोध विधि – प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का सारणीयन

सारणी क्र.1

प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.	क्षेत्र	समग्र छात्र (N_1= 250)		समग्र छात्राऐं (N_1= 250)		'टी' का मान	सार्थकता स्तर	
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		***0.05***	***0.01***
1	समायोजन	14.72	7.10	12.82	6.84	3.04	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
	df = 498						1.96	2.59

सारणी क्र. 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि समग्र छात्रों के समायोजन का मध्यमान (14.72) एवं समग्र छात्राओं के समायोजन का मध्यमान (12.82) है। इसका क्रांतिक अनुपात 3.04 पाया गया। 0.05 एवं 0.01

स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि समग्र छात्र–छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर है। अतः समग्र छात्रों का समायोजन का स्तर समग्र छात्राओं से उच्च है।

सारणी क्र.2

प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् शहरी छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.	क्षेत्र	शहरी छात्र (N_1= 125)		शहरी छात्राऐं (N_1= 125)		'टी' का मान	सार्थकता स्तर	
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		***0.05***	***0.01***
1	समायोजन	14.63	7.12	13.59	6.45	1.21	सार्थक अंतर नहीं है	सार्थक अंतर नहीं है
	df = 248						1.98	2.62

सारणी क्र. 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शहरी छात्रों के समायोजन का मध्यमान (14.63) एवं शहरी छात्राओं के समायोजन का मध्यमान (13.59) है। इसका क्रांतिक अनुपात 1.21 पाया गया। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि शहरी छात्र एवं शहरी छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है। अतः शहरी छात्र एवं छात्राओं का समायोजन का स्तर समान है।

सारणी क्र.3

प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.	क्षेत्र	ग्रामीण छात्र (N_1= 125)		ग्रामीण छात्राऐं (N_1= 125)		'टी' का मान	सार्थकता स्तर	
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		***0.05***	***0.01***
1	समायोजन	12.44	6.01	13.99	6.35	1.97	सार्थक अंतर नहीं है	सार्थक अंतर नहीं है
	df = 248						1.98	2.62

सारणी क्र. 3 को देखने पर ज्ञात होता है कि ग्रामीण छात्रों के समायोजन का मध्यमान (12.44) एवं ग्रामीण छात्राओं के समायोजन का मध्यमान (13.99) है। इसका क्रांतिक अनुपात 1.97 पाया गया। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण छात्र एवं ग्रामीण छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है। अतः ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं का समायोजन का स्तर समान है।

निष्कर्ष –

1. प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् समग्र छात्र एवं छात्राओं के समायोजन स्तर में अंतर पाया गया। समग्र छात्रों का समायोजन का स्तर समग्र छात्र–छात्राओं में उच्च पाया गया।
2. प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् शहरी छात्र एवं छात्राओं के समायोजन स्तर में कोई अंतर नहीं है।
3. प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के समायोजन स्तर में कोई अंतर नहीं है।

परिकल्पनाओं का सत्यापन –

1. प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् समग्र छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना क्र.1 अस्वीकृत की जाती है।
2. प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् शहरी छात्र–छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अतः परिकल्पना क्र.2 स्वीकृत की जाती है।

3. प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्र–छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना क्र.3 स्वीकृत की जाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. पाठक, पी.डी. (2010), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. हरलॉक, ई.बी. (1980), डेवलपमेंट साइकोलॉजी, टी.एम.एच पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3. कपिल, एच.के. (2009), सांख्यिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. मंगल, एस.के. (2009), शिक्षा मनोविज्ञान, पी.एच.आई लर्निंग प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।